

# डॉ. डेविड एल. मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी, पुराने नियम में सृष्टि, भूमि और मनोरंजन

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह सत्र 3 है, पुराने नियम में सृष्टि, भूमि और पुनर्निर्माण।

तो, हम सृष्टि, नई सृष्टि और भूमि के विषय पर विचार करना शुरू करते हैं।

मैंने उन सभी को एक साथ शामिल किया है क्योंकि, जैसा कि हम देखेंगे, सृष्टि और भूमि, मुझे लगता है कि जुड़े हुए हैं, और वे दोनों अपनी पूर्णता को पाते हैं जैसा कि हम देखेंगे और एक नई सृष्टि की आशा करेंगे, जिसे हम भविष्यवाणी ग्रंथों में प्रत्याशित पाते हैं लेकिन जो प्रकाशितवाक्य 21 में अपनी अंतिम पूर्णता पाती है। अब तक, हमने देखा है कि एक नए रचनात्मक कार्य में, परमेश्वर एक ऐसी दुनिया बनाता है जो उसके लोगों के जीवन को बनाए रखने के लिए उपयुक्त है, और सृष्टि परमेश्वर का एक उपहार है। भूमि उसके लोगों के लिए एक उपहार है, एक ऐसा वातावरण जिसमें वे रह सकते हैं, एक ऐसी जगह जहाँ परमेश्वर उनके साथ रहने और उनके साथ रहने का इरादा रखता है।

यह समझना महत्वपूर्ण है कि सृष्टि के विषय में भौतिक और आध्यात्मिक दोनों तत्व हैं। इसलिए, हम एक भौतिक पृथ्वी के बारे में बात कर रहे हैं, फिर भी यह आशीर्वाद का स्थान है, अपने लोगों के साथ परमेश्वर की उपस्थिति का स्थान है। यह एक ऐसा स्थान है जहाँ उनकी आज्ञाकारिता की आवश्यकता होती है।

इसलिए, जब हम सृष्टि और भूमि के विषय के बारे में सोचते हैं, तो हम एक ऐसे विषय से निपट रहे होते हैं जो न केवल विशुद्ध रूप से भौतिक है, बल्कि संभवतः इसमें भौतिक और आध्यात्मिक दोनों तत्व जुड़े हुए हैं। एक और दिलचस्प बात, शायद एक तरह का साइड नोट, लेकिन जिसे मैं बहुत विकसित नहीं करना चाहता क्योंकि इस बात पर भी बहस है कि उत्पत्ति 1-2 की भाषा को कैसे समझा जाए, जिसमें पृथ्वी निराकार और शून्य है, इससे पहले कि परमेश्वर सृष्टि के छह दिनों में इस वातावरण को लाने के लिए शुरू होता है, भूमि का यह उपहार जो वह अपने लोगों को देता है। लेकिन संभवतः, जब हम निराकार और शून्य के बारे में सोचते हैं, तो यह कम से कम एक विषय का परिचय देता है कि परमेश्वर अव्यवस्था या अव्यवस्था में जो कुछ भी है उसे लेता है और एक रचनात्मक कार्य में व्यवस्था लाता है या परमेश्वर एक रचनात्मक कार्य में अव्यवस्था पर काबू पाता है।

हम देखेंगे कि यह एक पैटर्न स्थापित करता है जो वास्तव में पुराने नियम और नए नियम में कई स्थानों पर उभर कर आएगा, जहाँ सृष्टि को अव्यवस्था के स्थान के रूप में देखा जाता है और अब, पाप के साथ, अराजकता का स्थान है जिसे परमेश्वर एक नए रचनात्मक कार्य में दूर करेगा जो अंततः एक नई सृष्टि में घटित होगा जिसकी भविष्यवाणी कुछ भविष्यवाणियों में की गई है

लेकिन प्रकाशितवाक्य 22 में भी। इसलिए, हम बाद में उस पर वापस आ सकते हैं, लेकिन बस इसे अपने दिमाग के कोने में रखें। हमने उत्पत्ति 1-2 को देखा है कि यह सृष्टि के बारे में क्या कहता है, लेकिन मैं कुछ और पुराने नियम के पाठों को देखना चाहता हूँ, और यदि आप पुराने नियम के पाठ के विस्तृत उपचार और सूची में रुचि रखते हैं, तो आप नए नियम के धर्मशास्त्र या नए नियम के बाइबिल धर्मशास्त्र, नए नियम में पुराने नियम के विषयों के विकास पर ग्रेग बील्स से परामर्श कर सकते हैं और उनमें से कुछ पाठों के अधिक विस्तृत पाठ और उपचार के लिए।

लेकिन मैं बस यह देखना चाहता हूँ कि मेरे खयाल से कुछ प्रमुख ग्रंथ क्या हैं जो उत्पत्ति 1-2 के बाद भी जारी रहते हैं, खास तौर पर परमेश्वर की सृष्टि में पाप और बुराई का परिचय। वे ग्रंथ सृष्टि और भूमि तथा नई सृष्टि के मूल भाव या विषय को विकसित करते हैं। पहला पड़ाव संभवतः उत्पत्ति 6-9 में बाढ़ की कथा होगी, जिसे मैं नई सृष्टि के मार्ग पर शीर्षक दूंगा।

यह बाढ़ का विवरण है और बाढ़ के बाद की पूरी कहानी, फिर से सूखी भूमि का उभरना, और जो हम पाते हैं कि परमेश्वर ने नूह को फिर से नियुक्त किया, मुझे लगता है कि यह उत्पत्ति अध्याय 1-2 में पहले वाले के मॉडल पर आधारित एक नया रचनात्मक कार्य है। इसलिए, जब आप उत्पत्ति अध्याय 1-2 और विशेष रूप से बाढ़ के विवरण में उत्पत्ति के अध्याय 8-9 को पढ़ते हैं, तो ऐसे कई संबंध हैं जो मुझे लगता है कि यह सुझाव देते हैं कि परमेश्वर सृष्टि में अपनी रुचि को नवीनीकृत कर रहा है या परमेश्वर, एक अर्थ में, सृष्टि को नया स्वरूप देने वाले लगभग एक नए रचनात्मक कार्य में नया स्वरूप दे रहा है। मैं उनमें से बस कुछ का उल्लेख करूँगा।

हमारे पास बहुत अधिक विवरण देखने का समय नहीं है, लेकिन उदाहरण के लिए, उत्पत्ति अध्याय 8, श्लोक 17 और 20 में, हम पाते हैं कि जल ने सारी सृष्टि को ढक रखा है, शायद उसी तरह जैसे आत्मा उत्पत्ति अध्याय 1 और श्लोक 2 में जलीय गहराई या जलीय सृष्टि के ऊपर मंडराती है। इसलिए, अध्याय 8 और 17-20 में, अपने साथ रहने वाले हर प्रकार के जीवित प्राणी को बाहर निकालो: पक्षी, जानवर, सभी जीव जो जमीन पर चलते हैं ताकि वे पृथ्वी पर बढ़ सकें। इसलिए, नूह अपने बेटों और अपनी पत्नी और अपने बेटों की पत्नियों, सभी जानवरों और सभी जीवों के साथ बाहर आया जो जमीन पर चलते हैं, और सभी पक्षी और पृथ्वी पर चलने वाली हर चीज एक के बाद एक जहाज से बाहर आई, और फिर नूह ने एक जहाज बनाया। वास्तव में, यह वह नहीं था जो मैं चाहता था।

यह अध्याय 7 है। चालीस दिनों तक, पृथ्वी पर बाढ़ आती रही, और जैसे-जैसे पानी बढ़ता गया, उन्होंने जहाज को पृथ्वी से ऊपर उठा दिया। पृथ्वी पर पानी बहुत बढ़ गया और बहुत बढ़ गया, और जहाज पानी की सतह पर तैरने लगा। वे पृथ्वी पर बहुत बढ़ गए, और पृथ्वी और आकाश के नीचे के सभी ऊँचे पहाड़ डूब गए।

पानी ऊपर उठ गया और बीस फीट से ज़्यादा गहराई तक पहाड़ों को ढक लिया। तब तक आपको यह तस्वीर मिल जानी चाहिए कि आपके पास पानी की यह तस्वीर है जो पूरी सृष्टि को ढक रही है, शायद उत्पत्ति 1-2 के प्रतिबिंब के रूप में, जहाँ आत्मा पानी की गहराई पर मंडराती है। फिर हम उत्पत्ति 8:11-14 में पाते हैं कि सूखी भूमि उभरती है, शायद उत्पत्ति 1 के प्रतिबिंब के

रूप में, जहाँ सृष्टि के तीसरे दिन सूखी भूमि उभरती है, जहाँ पानी अलग हो जाता है, और सूखी भूमि उभरती है।

इसलिए, बाढ़ की कहानी में, पानी कम हो जाता है, और सूखी ज़मीन उभर आती है। अध्याय 8 श्लोक 11 से शुरू होता है। जब कबूतर वापस लौटा, तो नूह ने एक कबूतर को बाहर भेजा; जब शाम को कबूतर उसके पास लौटा, तो उसकी चोंच में एक ताज़ा तोड़ा हुआ जैतून का पत्ता था।

तब नूह को पता चला कि धरती से पानी कम हो गया है। उसने फिर से कुछ दिन इंतज़ार किया और अपने कबूतर को फिर से बाहर भेजा, लेकिन इस बार वह वापस नहीं आया। नूह के 601वें साल के पहले महीने के पहले दिन तक धरती से पानी सूख चुका था और नूह ने जहाज़ से ढक्कन हटाया और देखा कि ज़मीन की सतह सूखी थी।

तो, सूखी भूमि के उभरने का यह चित्र, साथ ही शायद कबूतर द्वारा तोड़े गए जैतून के पत्ते का उल्लेख, उत्पत्ति 1 में पहले रचनात्मक कार्य में उभरने वाली वनस्पति को भी दर्शाता है। लेकिन फिर तीसरी बात जिस पर ध्यान देना है, पृथ्वी को ढकने वाले पानी के अलावा, सूखी भूमि और यहां तक कि पौधों के उभरने के अलावा, तीसरी बात आदम को दिया गया सृजन आदेश है, जिससे अध्याय 9 में नूह को भी दोहराया गया है। तो जैसे ही नूह और उसका परिवार इस तरह के नए सृजन, एक नए रचनात्मक कार्य में पानी के उभरने के बाद सूखी भूमि पर जहाज से निकला, अध्याय 9, श्लोक 1 में। तब परमेश्वर ने नूह और उसके बेटे को आशीर्वाद दिया, और उनसे कहा, फूलों-फलों और पृथ्वी में भर जाओ। और श्लोक 7, और तुम भी फूलों-फलों और पृथ्वी पर बढ़ो और उस पर बढ़ो। वास्तव में, जानवरों को भी यही आदेश दिया गया है।

पद 17: हर तरह के जीवित प्राणी को बाहर लाओ; यह अध्याय 8, पद 17 है, जो तुम्हारे साथ है, पक्षी, जानवर और सभी जीव जो जमीन पर चलते हैं ताकि वे पृथ्वी पर गुणा कर सकें और फलदायी हो सकें और उस पर संख्या में वृद्धि कर सकें। तो, वही आदेश जो आदम और हव्वा और जानवरों को बढ़ने और फलदायी होने, गुणा करने और पृथ्वी को भरने के लिए दिया गया था, अब नूह और उन जानवरों को दिया गया है जो जहाज से निकलते हैं। इसलिए, निष्कर्ष में, मुझे लगता है कि ये संबंध बताते हैं कि जलप्रलय की कहानी, एक अर्थ में, एक कमी और एक सृजन दोनों है।

यह पूरी धरती को पानी से ढकने वाली एक कमी और न्याय है, एक तरह से पहले सृजन को नष्ट करना, उसका न्याय करना और फिर उत्पत्ति के अध्याय 1 और 2 के अनुसार एक नया रचनात्मक कार्य करना। एक नया रचनात्मक कार्य जिसमें पानी कम हो जाता है, सूखी ज़मीन उभरती है, और पौधे उगते हैं, और फिर उत्पत्ति अध्याय 9 में नूह की तरह आदम को फिर से काम सौंपा जाता है। इसलिए, उत्पत्ति अध्याय 9 में, बाढ़ की कहानी को एक तरह से नई रचना की ओर बढ़ते हुए देखा जा सकता है। यह एक तरह से एक अर्ध-नया रचनात्मक कार्य है जहाँ भगवान पानी से अपनी पहली रचना का न्याय करते हैं लेकिन फिर एक नई रचना को आकार देना शुरू करते हैं, साथ ही एक बार फिर पहली रचना के प्रति भगवान की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करते हैं कि वह पूरी योजना को खत्म करके बस फिर से शुरू नहीं करने जा रहे हैं।

जल प्रलय की कथा के बाद अगला पड़ाव संभवतः उत्पत्ति अध्याय 12 है। उत्पत्ति 12, 1 से 2 में, हम एक लंबी कथा शुरू करते हैं, जहाँ अब्राहम मुख्य पात्र है और अध्याय 12 से शुरू होकर उत्पत्ति की पुस्तक के एक बड़े भाग में दिखाई देता है। उत्पत्ति अध्याय 12, 1 और 2 में, मैं उत्पत्ति 12 की पहली तीन आयतें पढ़ूँगा, जो अब्राहम से की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा का हिस्सा है, क्योंकि वह अब्राहमिक वाचा के रूप में जानी जाने वाली चीज़ को स्थापित करता है, जिसके बारे में हम बाद में बात करेंगे।

वैसे, यहाँ एक बात जो कही जानी चाहिए वह एक तरह से अलग है, लेकिन इसे कहने की ज़रूरत है, कम से कम सबसे पहले विषय पर तो बात करनी ही चाहिए। इन विषयों को एक-दूसरे से अलग करके उनसे निपटना असंभव है। जब आप एक विषय से निपटना शुरू करते हैं, तो आपको लगभग अनिवार्य रूप से उसे छूना पड़ता है और दूसरे विषयों में मिलाना पड़ता है।

वास्तव में, हम देखेंगे कि कुछ ऐसे ही पाठ जो हम सृष्टि के बारे में पढ़ते हैं, जैसे कि नई सृष्टि, अन्य विषयों के संबंध में भी पढ़े जाएँगे। इसलिए, इन्हें अलग-अलग तरीके से देखना असंभव है। वे एक-दूसरे से बहुत निकटता से जुड़े हुए हैं।

इसलिए, अब्राहम से संबंधित भूमि का मुद्दा भी वाचा और कई अन्य विषयों से निकटता से जुड़ा हुआ है। इसलिए, हम इस अध्याय को बाद में फिर से देखेंगे जब हम वाचा के विषय और उस वाचा से निपटेंगे जो परमेश्वर ने अब्राहम के साथ यहाँ और उत्पत्ति में अन्यत्र शुरू की थी। लेकिन मुझे अध्याय 12 के ये पहले तीन पद पढ़ने दें।

यहोवा ने अब्राहम से कहा, अपने देश, अपने लोगों और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। और मैं तुझसे एक बड़ी जाति बनाऊँगा। मैं तुझे आशीष दूँगा।

मैं तेरा नाम महान करूँगा, और तू आशीष का कारण होगा। और जो तुझे आशीर्वाद देंगे, मैं उनको आशीर्वाद दूँगा। जो तुझे शाप देगा, मैं उसे शाप दूँगा, और पृथ्वी के सारे लोग तेरे द्वारा आशीष पाएँगे।

अब, सृष्टि से जुड़े कुछ संबंधों पर ध्यान दें। आशीर्वाद और शाप की भाषा पर ध्यान दें जो सृष्टि से जुड़ सकती है। बाद में, वंश का मुद्दा, अब्राहम का वंश या वंशज, उत्पत्ति के अध्याय 3 में स्त्री के वंश से जुड़ता है।

तो, यहाँ कई अन्य संबंध हैं। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप पहले ही वचन में ध्यान दें कि अब्राहम को यहाँ बुलाने में परमेश्वर का इरादा अंततः उसे देश में लाना है। इसलिए, परमेश्वर वादा करता है कि वह अब्राहम को एक देश में लाने जा रहा है।

अब मेरा तत्काल प्रश्न यह है कि वह उसे किसी भूमि पर क्यों ले जा रहा है? इसका उद्देश्य क्या है? इस भूमि पर क्यों नहीं? वह किसी अन्य भूमि पर क्यों जा रहा है? दिन के अंत में, और हमारे उद्देश्यों के लिए, यह समझना पर्याप्त है कि यह उत्पत्ति 1 और 2 में सृष्टि में परमेश्वर के वादे को पूरा करने के लिए है। आदम और हव्वा को भूमि से निकाल दिया गया था। इसलिए, उत्पत्ति 1 और 2 में, परमेश्वर ने एक भूमि, आदम और हव्वा के रहने के लिए एक उपयुक्त वातावरण

बनाया। वह उन्हें अदन में, बगीचे के पवित्र स्थान में रखता है जहाँ परमेश्वर अपने लोगों के साथ रहता है।

वह उन्हें उनकी देखभाल करने और उन्हें रखने, उन्हें परमेश्वर के निवास स्थान के रूप में सुरक्षित रखने के लिए वहाँ रखता है। फिर भी आदम और हव्वा पाप करते हैं, और उन्हें भूमि से निकाल दिया जाता है। अब, मुझे लगता है कि अध्याय 12 में जो कुछ हो रहा है वह यह है कि परमेश्वर अब अपने लोगों को उस भूमि पर वापस लाने के अपने इरादे को पूरा कर रहा है जिसका आनंद लेने के लिए उसने मूल रूप से उत्पत्ति 1 और 2 में इरादा किया था। फिर से, हम उत्पत्ति 1 और 2 और यहाँ कथा के बीच कई अन्य संबंध देखेंगे।

लेकिन मुद्दा यह है कि आदम उत्पत्ति 1 और 2 में कई स्तरों पर जो गलत हुआ था उसे ठीक करने की परमेश्वर की योजना की शुरुआत है। लेकिन उनमें से एक स्तर भूमि का वादा है। परमेश्वर उत्पत्ति 1 और 2 में अपने लोगों के आनंद के लिए एक भूमि बना रहा है।

पाप के कारण उन्हें उससे निर्वासित किया जाता है। अब, जैसा कि हमने कहा, परमेश्वर अपनी योजना को रद्द नहीं कर सकता। लेकिन परमेश्वर अब ऐसा करेगा; पुराना नियम और नया नियम एक तरह से संघर्ष समाधान है।

उत्पत्ति के अध्याय 3 में प्रस्तुत संघर्ष का समाधान कैसे होगा? अब, हम देखते हैं कि समाधान होना शुरू हो गया है। हमने इसे उत्पत्ति 8 और 9 में बाढ़ की कहानी में अर्ध-रचनात्मक कार्य में पूर्वानुमानित और प्रत्याशित रूप से देखा था। लेकिन अब हम देखते हैं कि इसका समाधान होना शुरू हो गया है जब परमेश्वर अब्राहम को बुलाता है और अब उसे एक भूमि पर लाता है।

इसका मतलब है कि अब परमेश्वर अपने लोगों के लिए एक भूमि पर निवास करने का उद्देश्य पूरा करना शुरू कर रहा है। और हम बाद में परमेश्वर को उनके बीच निवास करते हुए देखेंगे। लेकिन अब्राहम परमेश्वर की योजना की शुरुआत है जो उत्पत्ति 1 और 2 में हुई गलती को ठीक करने के लिए है, जिसमें आदम और हव्वा को भूमि से निकाल दिया गया था।

अब, परमेश्वर उन्हें उस भूमि पर वापस लाने के अपने इरादे को प्रदर्शित कर रहा है जिसे उसने उत्पत्ति 1 और 2 में उनके आनंद के लिए बनाया था। कहने के लिए और भी बहुत कुछ है, लेकिन कम से कम इस बिंदु पर, उत्पत्ति 12 सिर्फ़ अलग-थलग नहीं है; यह कहानी का एक नया हिस्सा है। यह उत्पत्ति 1 और 2 से जुड़ता है और वहाँ जो गलत हुआ था उसे ठीक करने के लिए परमेश्वर के इरादे को व्यक्त करता है। एक और पड़ाव बिंदु, बस बहुत, बहुत संक्षेप में स्पर्श करने के लिए, लेकिन एक और पड़ाव बिंदु शायद पलायन होना चाहिए।

निर्गमन की पुस्तक में, निर्गमन के शुरुआती अध्यायों को संभवतः एक अर्थ में नई रचना के रूप में भी देखा जाना चाहिए। जाहिर है, निर्गमन, जैसा कि आप पुराने नियम में बाद में पाते हैं, इज़राइल के साहित्य में, निर्गमन परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को छुड़ाने और अपने लोगों को गुलामी और मिस्र से बाहर निकालने के लिए कार्य करने का उत्कृष्ट प्रदर्शन बन जाता है। लेकिन दूसरे स्तर पर, निर्गमन को संभवतः एक नई रचना के रूप में भी देखा जाना चाहिए।

वास्तव में, एक अंतर-नियम बाइबिल पाठ निर्गमन को एक नई सृष्टि कहता है। यह कुछ इस तरह से कहता है कि, एक अर्थ में, परमेश्वर सृजन कर रहा है, मानो कि वह चीजों को नए सिरे से बना रहा हो। उदाहरण के लिए, ग्रेग बील ने तर्क दिया है कि सभी विपत्तियों के आने के साथ, उनका अर्थ पृथ्वी पर न्याय करना था, ठीक उसी तरह जैसे परमेश्वर ने जलप्रलय के साथ पृथ्वी का न्याय किया था।

इसलिए, परमेश्वर द्वारा मूसा पर, मिस्र की भूमि पर लाई गई दस विपत्तियों को पृथ्वी पर विनाश या न्याय के रूप में देखा जा सकता है। एक बार फिर ध्यान दें, लाल सागर का विषय भी, हम देख सकते हैं, मैं तर्क दूंगा, और हम इसे बाद में देखेंगे, क्योंकि हम बाद में निर्गमन के विषय पर अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे। लेकिन पानी का फैलना, या पानी को हटाना, ताकि सूखी भूमि उभर आए, उत्पत्ति अध्याय 1 और 2 में सृष्टि के विवरण को भी दर्शाता है। जहाँ फिर से, परमेश्वर, कुछ ऐसा जो लोगों के लिए खतरा है, कुछ ऐसा जो एक बाधा है, कुछ ऐसा जो अव्यवस्थित है, अब हटा दिया गया है ताकि लोग सूखी भूमि पर पार कर सकें, अपनी विरासत के रास्ते पर।

यह वही भूमि है जिसका वादा अब्राहम से उत्पत्ति अध्याय 12 में किया गया था। इसलिए, पृथ्वी पर न्याय के रूप में विपत्तियों का यह विषय, निर्गमन एक तरह से नई रचना है, पानी को हटाना, ताकि लोग पार कर सकें और अंततः उस वादा किए गए देश में जा सकें जो परमेश्वर ने उन्हें दिया है। यह सब बताता है कि, एक अर्थ में, निर्गमन को एक नई रचना के रूप में भी देखा जा सकता है।

मैं बस संक्षेप में बताऊंगा, मैं किसी भी पाठ को विस्तार से नहीं देखूंगा, लेकिन जाहिर है, कनान की भूमि पर विजय से संबंधित पुराने नियम के आख्यान अब्राहम और कुलपिताओं से किए गए वादे की पूर्ति के लिए हैं, जो उत्पत्ति 12 और अन्य जगहों से शुरू होते हैं। जाहिर है, अब्राहम के बाद, अन्य कुलपिताओं को भी उस भूमि का वादा किया गया था, जिसका वादा परमेश्वर ने मूल रूप से अब्राहम से किया था। इसलिए, यहोशू और अन्य जगहों से शुरू होने वाले कनान की भूमि पर विजय के पुराने नियम के आख्यान, अब्राहम से किए गए वादे की पूर्ति के लिए हैं, लेकिन उत्पत्ति 1 और 2 में सृष्टि के लिए परमेश्वर के इरादे की भी पूर्ति करते हैं। यह उस भूमि का अनुग्रहपूर्ण प्रावधान है जिसे परमेश्वर ने उत्पत्ति 1 और 2 में पहले ही स्थापित कर दिया था। आदम और हव्वा पाप के कारण हार गए, लेकिन अब, अब्राहम से शुरू होकर और अब विजय में पूर्ण होते हुए, परमेश्वर उत्पत्ति अध्याय 1 और 2 और विशेष रूप से उत्पत्ति 3 में आदम और हव्वा को निष्कासित करने के बाद लोगों को भूमि पर वापस लाकर पूर्ति ला रहा है।

लेकिन, जैसा कि कहानी में बताया गया है, आदम और हव्वा की तरह, इस्राएल ने भी भूमि पर अवज्ञा की, और उन्हें परमेश्वर के उपहार के रूप में, परमेश्वर के आशीर्वाद के स्थान के रूप में, और परमेश्वर की उपस्थिति के स्थान के रूप में भूमि से निर्वासित कर दिया गया। आपको एक बार फिर से दिखाने के लिए कि ये सभी विषय आपस में जुड़े हुए हैं, यह वाचा के वादे का हिस्सा था, कि परमेश्वर ने वादा किया था कि अगर वे आज्ञा मानेंगे तो भूमि में आशीर्वाद होगा, लेकिन अवज्ञा के कारण शाप और निष्कासन और निर्वासन होगा। और ठीक यही हुआ।

इसलिए, विशेष रूप से जब आप निर्वासन-पूर्व या निर्वासन-पूर्व भविष्यवक्ताओं में से कुछ के बारे में पढ़ते हैं, तो आप कहानी पढ़ना शुरू करते हैं कि कैसे पहले इस्राएल के उत्तरी राज्य और फिर यहूदा के दक्षिणी राज्य को निर्वासित कर दिया गया, उन्हें उस भूमि से हटा दिया गया, जिस स्थान पर परमेश्वर ने उन्हें लाया था, वह स्थान जहाँ उन्होंने अब्राहम से वादा किया था, उत्पत्ति 1 और 2 की पूर्ति में। अब, उन्हें उसी तरह निर्वासित किया गया है जैसे आदम और हव्वा को पहली सृष्टि से निर्वासित किया गया था। तो, यह फिर से हमारे सामने सवाल छोड़ता है, फिर एक बार फिर, वही सवाल जो हमने उत्पत्ति 3 में देखा था अब फिर से उठता है। परमेश्वर अपने लोगों को उनकी भूमि पर कैसे वापस लाएगा? भूमि एक बार फिर से एक ऐसी जगह कैसे बनेगी जहाँ परमेश्वर के लोग रहते हैं और जहाँ परमेश्वर उनके बीच में उनके साथ रहता है? परमेश्वर संघर्ष को कैसे हल करेगा? वह अपना वादा कैसे पूरा करेगा? उत्पत्ति 1 और 2 से शुरू करते हुए, लेकिन फिर उत्पत्ति अध्याय 12 में अब्राहम से शुरू करते हुए।

इसका उत्तर भविष्यसूचक साहित्य और भविष्यवक्ताओं में मिलता है। जहाँ भविष्यवक्ता अन्य बातों के अलावा बार-बार पूर्वानुमान लगाते हैं, और हम देखेंगे कि इनमें से कई विषयों के विकास में भविष्यसूचक साहित्य एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भविष्यवक्ता उस समय का पूर्वानुमान लगाते हैं जब परमेश्वर एक बार फिर अपने लोगों को उनकी भूमि पर वापस लाएगा।

फिर से, उत्पत्ति 1 और 2 की पूर्ति में, लेकिन उत्पत्ति 12 में अब्राहम से किए गए वादे की पूर्ति में भी, जो दोनों एक साथ चलते हैं। ये दो अलग-अलग बातें नहीं हैं। लेकिन भविष्यवक्ता उत्पत्ति 1 और 2 और उत्पत्ति 12 की पूर्ति में, एक ऐसे समय की आशा करते हैं जब परमेश्वर अपने लोगों को उनकी भूमि पर वापस लाएगा।

इसलिए, अपने लोगों के रहने के लिए उपयुक्त स्थान प्रदान करने के लिए एक भूमि का पुनः निर्माण करने का परमेश्वर का इरादा पूरा होगा और ताकि परमेश्वर उनके साथ रह सके। इसलिए, मैं जो करना चाहता हूँ वह यह है कि कुछ अधिक स्पष्ट भविष्यसूचक ग्रंथों को उदाहरणों के रूप में देखें कि कैसे भविष्यसूचक ग्रंथ एकमत हैं। हम कई अन्य उदाहरणों की ओर इशारा कर सकते हैं, लेकिन यह प्रदर्शित करने के लिए कि कैसे भविष्यसूचक ग्रंथ परमेश्वर के लोगों द्वारा इस्राएल की भूमि पर वापसी की आशा करने में एकमत हैं।

और मुझे लगता है कि पाठ की शुरुआत यहजेकेल अध्याय 36 और 37 से होगी। फिर से, कोई जकर्याह के पाठ की ओर इशारा कर सकता है, कोई यिर्मयाह के पाठ की ओर इशारा कर सकता है, और कोई वस्तुतः किसी भी भविष्यवाणी की पुस्तक के पाठ की ओर इशारा कर सकता है जो निर्वासन के बाद भूमि से वापसी की आशा करता है। जैसा कि इस्राएल ने भूमि में रहने के लिए आदम और हव्वा के पैटर्न का पालन किया, अवज्ञा ने निर्वासन का कारण बना।

अब, भविष्यवाणी के पाठ उत्पत्ति 1 और 2 तथा उत्पत्ति अध्याय 12 की पूर्ति में भूमि पर वापसी की आशा करते हैं। यहजेकेल 36 और 37, वास्तव में यहजेकेल 37 से पुस्तक के अंत में, अध्याय 48 तक। लेकिन मैं एक क्षण के लिए यहजेकेल अध्याय 36 और 37 के कुछ अंशों पर ध्यान केन्द्रित करूँगा जहाँ परमेश्वर लोगों को भूमि पर पुनः स्थापित करने के अपने इरादे का वर्णन करता है।

और इनमें से कुछ ग्रंथों में उत्पत्ति 1 और 2 तथा उत्पत्ति 12 के साथ भी स्पष्ट संबंध हैं। एक बार फिर, यह केवल इसलिए नहीं है कि परमेश्वर उन्हें वापस भूमि पर ला रहा है क्योंकि उन्हें रहने के लिए एक स्थान की आवश्यकता है। बल्कि परमेश्वर का इरादा उत्पत्ति 1 और 2 में वापस जाता है। इसलिए यहजेकेल 36 और 37 में, हम पाते हैं कि परमेश्वर एक ऐसे समय की भविष्यवाणी कर रहा है जब वह लोगों को निर्वासन से इकट्ठा करेगा और उन्हें वापस उनकी भूमि पर लौटाएगा।

तो, उदाहरण के लिए, अध्याय 36 में, मैं 17 से 18 तक की आयतों का थोड़ा-बहुत अंश पढ़ूंगा। मैं 16वीं आयत भी पढ़ूंगा। और प्रभु के वचन ने मुझसे कहा, हे मनुष्य के पुत्र, जो इन आयतों में यहजेकेल को संबोधित करने का परमेश्वर का तरीका है।

हे मनुष्य के सन्तान, जब इस्राएल के लोग अपने देश में रहते थे, तो उन्होंने अपने आचरण और अपने कार्यों से उसे अशुद्ध कर दिया। यह वही देश है जिसे परमेश्वर ने अब्राहम और उत्पत्ति 1 और 2 से किए गए अपने वादों को पूरा करने के लिए उन्हें दिया था। उन्होंने अपने आचरण और अपने कार्यों से उसे अशुद्ध कर दिया। उनका आचरण मेरी दृष्टि में एक स्त्री की मासिक अशुद्धता के समान था।

इसलिए मैंने उन पर अपना क्रोध भड़काया क्योंकि उन्होंने देश में खून बहाया था और अपनी मूर्तियों से देश को अपवित्र किया था। मैंने उन्हें राष्ट्रों में तितर-बितर कर दिया और वे देश-देश में तितर-बितर हो गए। मैंने उनके आचरण और उनके कामों के अनुसार उनका न्याय किया।

और पद 24, क्योंकि मैं तुम्हें जातियों में से निकालूंगा। मैं तुम्हें सब देशों से वापस इकट्ठा करूंगा और तुम्हें तुम्हारे निज देश में वापस ले आऊंगा। और पद 28 भी।

तुम उस देश में रहोगे जो मैंने तुम्हारे पूर्वजों को दिया था। यही वादा अब्राहम और इसहाक से किया गया था, जो इसहाक और याकूब से दोहराया गया था। मैं तुम्हें उस देश में वापस ले आऊंगा जो मैंने तुम्हारे पूर्वजों को दिया था।

तुम मेरे लोग होगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊंगा। वाचा का सूत्र है, इसलिए भूमि और वाचा भी जुड़े हुए हैं। लेकिन मेरा कहना यह है कि इन सभी ग्रंथों में ध्यान दें कि परमेश्वर अपने लोगों को भूमि पर पुनः स्थापित करने का इरादा रखता है, जिसे वह उत्पत्ति 12 में शुरू होने वाले अपने पूर्वजों से किए गए वादे से जोड़ता है, जिसके बारे में हमने तर्क दिया कि यह उत्पत्ति 1 और 2 में परमेश्वर के इरादे की पूर्ति का हिस्सा है, कि उसके लोग उस भूमि, उस दयालु भूमि या पृथ्वी पर रहेंगे जिसे परमेश्वर अपने लोगों के लिए बनाता है।

अगले अध्याय पर जाने के लिए, यहजेकेल का अध्याय 37. 37 और श्लोक 21 से 23. और परमेश्वर यहजेकेल को लोगों से कहने के लिए कहता है; प्रभु यहोवा यों कहता है।

मैं इस्राएलियों को उन राष्ट्रों से निकालूंगा जहाँ वे निर्वासित हैं। मैं उन्हें चारों ओर से इकट्ठा करूंगा और उन्हें उनके अपने देश में वापस लाऊंगा। मैं उन्हें इस्राएल के पहाड़ों पर एक राष्ट्र बनाऊंगा।

उन सब पर एक ही राजा होगा, और वे फिर कभी दो जातियां न होंगे, और न राज्य-राज्यों में बँटे होंगे। वे अपनी मूरतों और घिनौनी प्रतिमाओं या अपने किसी अन्य अपराध के द्वारा अपने आप को फिर अशुद्ध न करेंगे, क्योंकि मैं उन्हें उनके सब पापमय पतन से छुड़ाऊंगा।

मैं उन्हें शुद्ध करूँगा। वे मेरे लोग होंगे। मैं उनका परमेश्वर होऊँगा।

यहाँ फिर से वाचा का सूत्र है। श्लोक 25. वे उस देश में रहेंगे जो मैंने अपने सेवक याकूब को दिया था, वह देश जहाँ तुम्हारे पूर्वज रहते थे।

इसलिए, इस खंड में, परमेश्वर ने अब्राहम से किए गए वादे की पूर्ति में लोगों को भूमि पर वापस लाने का अपना इरादा व्यक्त किया कि वह उन्हें भूमि देगा। और फिर से, दोहराने के लिए, अब्राहम को भूमि का वह वादा उत्पत्ति अध्याय 1 और 2 से मानवता के लिए परमेश्वर के मूल इरादे की पूर्ति के लिए था। इसलिए अब हम इस भूमि विषय के विकास को, कम से कम इस बिंदु पर, पुराने नियम के भविष्यवक्ता की उस दिन की प्रत्याशा में चरमोत्कर्ष पर पाते हैं जब परमेश्वर अपने लोगों को अपने मूल इरादे की पूर्ति में भूमि पर वापस लाएगा। इसकी एक दिलचस्प विशेषता यह भी है कि हमने दोनों खंडों में जो मैंने यहेजकेल 36 और 37 में पढ़ा है, कुलपिताओं, अब्राहम, अब्राहम से किए गए वादे का स्पष्ट संदर्भ देखा है।

लेकिन इसमें अदन के बगीचे के बारे में भी कुछ संदर्भ हैं, जो यह सुझाव देते हैं कि भूमि पर वापसी भी अदन के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों की पूर्ति की ओर वापसी थी, मेरी समझ में। तो, अध्याय 36 पर वापस जाएँ और श्लोक 30 से शुरू करें। यह श्लोक 28 में परमेश्वर द्वारा उन्हें भूमि पर पुनः स्थापित करने के संदर्भ में है।

अब मैं वास्तव में श्लोक 29 और 30 पढ़ूँगा। मैं तुम्हें तुम्हारी सारी निर्दयता से बचाऊँगा, मैं अनाज को बुलाकर उसे भरपूर करूँगा, और तुम पर अकाल नहीं लाऊँगा। मैं पेड़ों के फल और खेत की फसलों को बढ़ाऊँगा ताकि तुम अकाल के कारण राष्ट्रों के बीच फिर से अपमानित न हो।

बढ़ते फल और बढ़ती फसलों की भाषा पर ध्यान दें। अब, यह आशीर्वाद और फलदायी होने का एक सामान्य विषय हो सकता है, जो शायद है, लेकिन अगला मुझे यह सोचने पर मजबूर करता है कि इसका भी एक संबंध हो सकता है: अगले जोड़े का ईडन से संबंध है। इसलिए, पद 25 में, मैं पद 34 पढ़ूँगा; यह अभी भी यहेजकेल का अध्याय 36 है।

यहेजकेल अध्याय 36, श्लोक 34. उजाड़ भूमि उन सभी की दृष्टि में उजाड़ रहने के बजाय खेती की जाएगी जो इससे होकर गुजरेंगे। वे कहेंगे कि यह उजाड़ भूमि अदन के बगीचे की तरह हो गई है।

जो शहर खंडहर, उजाड़ और नष्ट हो चुके थे, वे अब किलेबंद और आबाद हो चुके हैं। तो, ईडन गार्डन के साथ स्पष्ट संबंध पर ध्यान दें। फिर से, कोई यह कह सकता है कि यह केवल एक रूपक है कि संभवतः भूमि कितनी अच्छी होगी।

लेकिन फिर से, जब आप इसे बाइबिल और धर्मशास्त्रीय दृष्टि से देखते हैं, तो इस तथ्य को नज़रअंदाज़ करना मुश्किल है कि यह सिर्फ़ एक रूपक से ज़्यादा है कि यह भूमि कैसी होने जा रही है। लेखक ने यह इरादा व्यक्त किया है कि परमेश्वर अपने लोगों के लिए अपने उद्देश्यों को पुनर्स्थापित करता है, जो मूल रूप से ईडन गार्डन में था। अध्याय 36 और पद 11 वही हैं जो मुझे लगता है कि उत्पत्ति 1 और 2 के लिए अन्य स्पष्ट संकेत हैं। वास्तव में, मैं वापस आऊंगा और पद 9, यहजेकेल 36, पद 9 से शुरू करूंगा। मैं तुम्हारे लिए चिंतित हूँ और तुम पर कृपा दृष्टि रखूंगा।

तुम जोते जाओगे और बोओगे। मैं तुम पर लोगों की संख्या बढ़ाऊंगा, अर्थात् इस्राएल का सारा घराना। नगर बसाए जाएंगे, और खण्डहर फिर से बनाए जाएंगे।

मैं तुम पर मनुष्यों और पशुओं की संख्या बढ़ाऊँगा, और वे फलवन्त होंगे और असंख्य हो जाएँगे। मैं तुम पर लोगों को पहले की तरह बसाऊँगा और तुम्हें पहले से भी अधिक समृद्ध बनाऊँगा। ध्यान दें कि लोगों और जानवरों दोनों की भाषा भूमि पर फलवन्त और बढ़ती या बढ़ती जा रही है, जो मुझे लगता है कि उत्पत्ति 1 और 2 और परमेश्वर के अपने पहले सृजन के इरादे का स्पष्ट संकेत है।

तो, यहजेकेल की पुस्तक, विशेष रूप से 36 और 37, लेकिन मुझे लगता है कि हम अन्य पाठ भी पा सकते हैं, और यहजेकेल की पुस्तक के अंत तक, अपने लोगों को इकट्ठा करने और उन्हें निर्वासन से बहाल करने और उन्हें इस बाइबिल के धार्मिक संबंध की पूर्ति में उनकी भूमि पर वापस लाने के लिए परमेश्वर के इरादे को व्यक्त करते हैं, उत्पत्ति 12 की पूर्ति और अब्राहम और कुलपिताओं से परमेश्वर के वादे, लेकिन साथ ही अदन के बगीचे में वापस जाना और भूमि पर वापसी का प्रदर्शन करना अंततः सभी सृष्टि के लिए परमेश्वर के इरादे और उत्पत्ति 1 और 2 में उनके पहले रचनात्मक कार्य में व्यक्त उनके इरादे की अभिव्यक्ति है। फिर से, परमेश्वर इसे खत्म नहीं करने जा रहा है, और वह योजना ए थी जो काम नहीं आई; चलो योजना बी की कोशिश करते हैं, लेकिन परमेश्वर अपनी सृष्टि के लिए अपने उद्देश्यों को पूरा करने का इरादा रखता है। उनमें से दो में एक और महत्वपूर्ण पाठ पाया जाता है जिसे हम यशायाह की पुस्तक, भविष्यवक्ता यशायाह में देखेंगे। यशायाह के अध्याय 60 में, इसी प्रकार, हम यशायाह में सभी प्रकार के अनुच्छेदों को देख सकते हैं, विशेष रूप से अध्याय 40 से, जहाँ परमेश्वर बार-बार अपने लोगों को उनकी भूमि पर पुनः स्थापित करने के अपने इरादे को व्यक्त करना आरम्भ करता है।

अध्याय 40 वास्तव में एक प्रसिद्ध है: प्रभु कहते हैं, मेरे लोगों को सांत्वना दो, यरूशलेम से कोमलता से बात करो, उसे घोषणा करो कि उसकी सेवा पूरी हो गई है। पद 3, रेगिस्तान में पुकारने वाले की आवाज़, प्रभु का मार्ग तैयार करती है, हमारे परमेश्वर के लिए एक राजमार्ग। हर घाटी को ऊपर उठाया जाएगा, हर पहाड़ और पहाड़ी को कम किया जाएगा, ऊबड़-खाबड़ जमीन को समतल किया जाएगा, ऊबड़-खाबड़ जगह को समतल किया जाएगा, प्रभु की महिमा प्रकट होगी।

यह पहले से ही ईश्वर द्वारा यशायाह 40 में व्यक्त किया गया अपना इरादा है कि लोगों को एक नए रचनात्मक कार्य में भूमि पर वापस लाया जाए। मैं जिस पाठ को देखना चाहता हूँ वह यशायाह, अध्याय 60 है। यशायाह अध्याय 60 में, परमेश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना का वर्णन या पूर्वानुमान

करना शुरू करना जो अब निर्वासन में हैं, अध्याय 60, उठो और चमको क्योंकि तुम्हारा प्रकाश आ गया है और प्रभु की महिमा तुम पर चमक रही है।

अब आप देखेंगे, आपको कम से कम अंग्रेजी अनुवाद में भूमि या ईडन शब्द या ऐसा कुछ नहीं मिलेगा, लेकिन स्पष्ट रूप से लोगों को भूमि पर वापस लाने की यह धारणा है। उठो और चमको क्योंकि तुम्हारा प्रकाश आ गया है और प्रभु की महिमा तुम्हारे ऊपर चमक रही है। देखो, अंधकार पृथ्वी को ढक रहा है और लोगों पर घना अंधकार छाया हुआ है।

परन्तु यहोवा तेरे ऊपर उदय होगा, और उसका तेज तेरे ऊपर प्रगट होगा। जातियां तेरे पास अर्थात् यरूशलेम और इस्राएल के पास आएंगी, और राजा तेरे भोर के तेज की ओर आएंगे। अपनी आंखें उठाकर अपने चारों ओर देखें, और सब इकट्ठे होकर तेरे पास आएँ।

तेरे बेटे दूर से आएँगे, और तेरी बेटियाँ उनकी गोद में उठाई जाएँगी। तब तू देखेगी और तेरे चेहरे पर खुशी छा जाएगी, और तेरा दिल खुशी से झूम उठेगा। समुद्र की दौलत तेरे पास लाई जाएगी; राष्ट्रों की दौलत तेरे पास आएगी।

मैं पद 9 पर जाऊँगा। निश्चय ही द्वीप मेरी ओर देखते हैं, और आगे-आगे तर्शीश के जहाज़ हैं, जो तेरे बेटों को चाँदी-सोने के साथ दूर से ला रहे हैं, तेरे परमेश्वर यहोवा, इस्राएल के पवित्र परमेश्वर की महिमा के लिए, जिसने तुझे वैभव से संपन्न किया है। पद 10, विदेशी लोग तेरी दीवारों फिर से बनाएँगे, राजा तेरी सेवा करेंगे। हम आगे बढ़ सकते हैं और यशायाह के अध्याय 60 को और अधिक पढ़ सकते हैं, और मैं आपको उसका शेष भाग पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करूँगा क्योंकि पूरा अध्याय परमेश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना के लिए समर्पित है।

तो अब, यह परमेश्वर के लोगों के विषय को भी छूता है। लेकिन यशायाह 60 परमेश्वर के लोगों की वापसी, परमेश्वर के लोगों की भूमि पर बहाली का वर्णन करता है। एक बार फिर, विहित संदर्भ में, यह अब्राहम से किए गए परमेश्वर के वादों की पूर्ति है, साथ ही सृष्टि के लिए उनके मूल इरादे की भी।

शायद इसकी सबसे पूर्ण भविष्यवाणी यशायाह के अध्याय 65 में पाई जाती है। और यशायाह अध्याय 65, बहुत ही रोचक ढंग से, भूमि की बहाली की इस अवधारणा को लेता है और इसे कुछ कुंजियों में ऊपर उठाता है। पद 17 से शुरू होकर, लोगों के निर्वासन से भूमि पर लौटने का वादा अब एक नई रचना के संदर्भ में समझा जाता है।

और यहाँ हमें नई सृष्टि की भाषा मिलती है। वास्तव में, हमें नए आकाश और नई पृथ्वी की भाषा मिलती है, जिसे हम बस कुछ ही पलों में देखेंगे, ऐसा लगता है कि यह उत्पत्ति के विवरण को भी याद दिलाती है। तो, उत्पत्ति अध्याय 1 और 2 से कई संबंध हैं। तो ऐसा लगता है, जैसा कि मैंने कहा, यह भूमि की वापसी की उम्मीदों को एक नई कुंजी तक ले जाता है, जहाँ अब बहाली की उम्मीदें केवल फिलिस्तीन की भूमि से आगे बढ़ गई हैं और अब एक संपूर्ण पुनर्निर्मित ब्रह्मांड या एक नई सृष्टि को शामिल करती हैं।

नया आकाश और एक नई पृथ्वी बनाऊँगा। पिछली बातें याद नहीं रहेंगी, न ही वे दिमाग में आएँगी। लेकिन जो मैं बनाऊँगा, उसमें खुश रहो और हमेशा खुश रहो, क्योंकि मैं यरूशलेम को खुशियों से भर दूँगा और उसके लोगों को खुशियाँ दूँगा।

मैं यरूशलेम पर आनन्दित होऊँगा और अपने लोगों से प्रसन्न होऊँगा। उसमें रोने और चिल्लाने की आवाज़ फिर कभी नहीं सुनाई देगी। और हम कुछ ही देर में कुछ और आयतें पढ़ेंगे।

नया आकाश और एक नई पृथ्वी बनाऊँगा। इसलिए परमेश्वर अब लोगों को निर्वासन से वापस लाने का इरादा व्यक्त करता है, लेकिन अब केवल कनान की भूमि, वादा किए गए देश में वापसी के संदर्भ में नहीं, बल्कि अब एक संपूर्ण पुनर्निर्मित ब्रह्मांड में निवास करने के संदर्भ में।

और मैं चाहता हूँ कि आप उत्पत्ति अध्याय 1 और 2 के साथ सभी संबंधों पर ध्यान दें। पहला जिसका हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं, वह श्लोक 17 में है, जहाँ नया आकाश और नई पृथ्वी उत्पत्ति 1 और 2 के मूल सृजित क्रम को याद दिलाते हैं। यह उत्पत्ति अध्याय 1 और श्लोक 1 में है, जहाँ लेखक कहता है, आरंभ में, परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया। अब हम पाते हैं कि परमेश्वर एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी का निर्माण कर रहा है। इसलिए शब्दावली के लिहाज से भी, आकाश और पृथ्वी की भाषा, जिसे यहाँ यशायाह 65, 17 में दोहराया गया है, मूल सृजित कार्य को याद दिलाती है।

उसी तरह जैसे 17 के दूसरे भाग में, पिछली बातें याद नहीं की जाएँगी। शायद यह भी पूर्व सृष्टि का एक संकेत है, साथ ही निर्वासन में उनकी स्थिति भी। इसलिए, नया स्वर्ग और नई पृथ्वी उत्पत्ति 1 और 1 के मूल सृजित कार्य को याद दिलाते हैं। शुरुआत में, परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माण किया।

अब, परमेश्वर एक नया आकाश और नई पृथ्वी बनाता है। नंबर दो, वास्तव में, जब आप आगे बढ़ते हैं और पद 20 में पढ़ते हैं, तो यह तथ्य कि कोई असामयिक मृत्यु नहीं है, आदम के पाप के कारण मृत्यु के अभिशाप की याद दिलाता है। पद 20 को देखें: क्योंकि उसमें फिर कभी ऐसा शिशु नहीं होगा जो थोड़े दिन जीवित रहे, या ऐसा बूढ़ा व्यक्ति जो अपनी आयु पूरी न करे।

जो सौ साल की उम्र में मरेगा, वह सिर्फ़ जवान समझा जाएगा। जो सौ साल तक नहीं पहुँचेगा, वह शापित समझा जाएगा। वे घर बनाकर उनमें रहेंगे, और वे दाख की बारियाँ लगाएँगे और उनके फल खाएँगे, इत्यादि।

लेकिन ध्यान दें कि मैं जिस बात की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ, वह है इस भाषा में कि अब कोई असमय मृत्यु नहीं होगी, कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं जो अपना जीवन पूरी तरह से नहीं जीता। अब यशायाह में कहीं और, भविष्यवक्ता वास्तव में उस समय की आशा करता है जब मृत्यु नहीं होगी। लेकिन हम चाहे जिस तरह से भी इस पर विचार करें, मुझे लगता है कि यशायाह शायद बहुत ही काव्यात्मक भाषा में बोल रहा है कि कैसे पाप के कारण पहली सृष्टि में जो हुआ वह अब नई सृष्टि में उलट जाएगा।

और इसलिए, अब अकाल मृत्यु न होने की यह भाषा आदम के पाप के परिणामस्वरूप जो हुआ, उसके उलट होने को दर्शाती है। आयत 21 और 22 में ध्यान दें कि लेखक एक ऐसे समय की कल्पना करता है जब शोषण या अन्याय नहीं होगा। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप भूमि में फलदायी होने की भाषा पर ध्यान दें जो फिर से ईडन गार्डन की भाषा की याद दिलाती है।

इसलिए, 21 और 22, वे घर बनाएंगे और उनमें रहेंगे; यही परमेश्वर के लोग, इस्राएल हैं, जब वह उन्हें वापस भूमि पर ले आएगा। वे अंगूर के बाग लगाएँगे और उनके फल खाएँगे। वे अब घर नहीं बनाएंगे, और दूसरे लोग उनमें रहेंगे या पौधे लगाएँगे और खाएँगे।

क्योंकि जैसे वृक्षों की आयु होती है, वैसे ही मेरे लोगों की आयु भी होगी। इसलिए, मैंने देखा कि वृक्षों और फलवन्तता की भाषा मुझे ईडन की भाषा की याद दिलाती है। इसलिए, यह नई सृष्टि एक नया ईडन है, उत्पत्ति 1 से 3 में पहले वाले के बाद एक नई सृष्टि। मुझे लगता है कि ईडन का एक विशिष्ट संदर्भ है, और वह श्लोक है जिसे हमने अभी पढ़ा है, श्लोक 22 का दूसरा भाग।

क्योंकि जैसे वृक्षों के दिन होते हैं, वैसे ही मेरे लोगों के दिन भी होंगे। दिलचस्प बात यह है कि सेप्टुआजेंट, पुराने नियम का यूनानी अनुवाद, यहाँ यशायाह 65 पद 22 में, जीवन के वृक्ष के दिनों या जीवन के वृक्ष के रूप में है, जो स्पष्ट रूप से उत्पत्ति अध्याय 2 में ईडन के बगीचे से संबंध स्थापित करता है, जिसमें जीवन के वृक्ष का स्पष्ट संदर्भ है। इसलिए, यशायाह अध्याय 65, यशायाह 65 उस दिन की आशा करता है जब परमेश्वर अपने लोगों को भूमि पर वापस लाएगा, लेकिन अब ऐसा लगता है कि यह केवल फिलिस्तीन की भूमि पर वापसी से कहीं अधिक है, बल्कि उत्पत्ति 1 और 2 में पहली सृष्टि के तरीके के अनुसार एक नया ब्रह्मांड, एक नई रचना, एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी है। आप अध्याय 62 और पद 66 में कुछ ऐसा ही पाते हैं।

यशायाह 66 और श्लोक 22 फिर से, जैसा कि नया आकाश और नई पृथ्वी जो मैं बनाऊंगा, मेरे सामने स्थिर रहेंगे, यहोवा की यही वाणी है, वैसे ही तुम्हारा नाम और वंश भी स्थिर रहेगा। तो एक बार फिर, यशायाह नई सृष्टि के संदर्भ के साथ समाप्त होता है। आखिरी पाठ जिसके बारे में मैं बात करना चाहता हूँ, वह है, यह दिलचस्प पाठ है जिसे हम भूमि से नहीं जोड़ सकते हैं लेकिन भजन संहिता में कई पाठ हैं जो एक दिन की आशा करते हैं जब मसीहा, जब एक राजा शासन करेगा, दाऊद का पुत्र शासन करेगा, उसका शासन पूरी पृथ्वी को घेरने और कवर करने के लिए विस्तारित होगा।

पूरी धरती उसकी विरासत होगी। इसलिए, उदाहरण के लिए, भजन अध्याय 2 और श्लोक 8 में, जिसे अक्सर विद्वानों द्वारा शाही भजन के रूप में लेबल किया जाता है या वर्णित किया जाता है, भजन अध्याय 2 और श्लोक 8 में, परमेश्वर राजा, अभिषिक्त व्यक्ति को संबोधित करते हुए कहता है, मुझसे मांगो और मैं राष्ट्रों को तुम्हारी विरासत बनाऊंगा, पृथ्वी के छोर तक को तुम्हारा अधिकार बनाऊंगा। तुम उन पर लोहे के राजदंड से शासन करोगे, और तुम उन्हें मिट्टी के बर्तनों की तरह टुकड़े-टुकड़े कर दोगे।

इसलिए, भजन अध्याय 2 पद 8 एक समय की आशा करता है, आशा करता है कि मसीहा, अभिषिक्त व्यक्ति को अंततः पृथ्वी के छोर दिए जाएँगे, न कि केवल फिलिस्तीन की भूमि, बल्कि

पृथ्वी के छोर उसके अधिकार के रूप में। अर्थात्, उसी तरह, जैसे आदम और हव्वा को परमेश्वर के शासन को सृष्टि की संपूर्णता को शामिल करने के लिए विस्तारित करना था, अब भजन अध्याय 2 पद 8 में अभिषिक्त व्यक्ति, एक मसीहाई व्यक्ति में अंततः इसकी पूर्ति होती दिखती है, जहाँ उसे पृथ्वी के छोर उसके अधिकार के रूप में दिए जाएँगे, जो उस पर शासन करेगा। भजन अध्याय 89, एक और भजन जो दाऊद के राजा या मसीहाई व्यक्ति या शासक को संबोधित करता है, भजन 89 और पद 27 में।

मैं पद 25 पर वापस आता हूँ। मैं उसका हाथ थामूँगा, पद 20 का हवाला देते हुए, मैंने अपने सेवक दाऊद को पा लिया है। मैंने अपने पवित्र तेल से उसका अभिषेक किया है।

फिर, श्लोक 25 में, मैं उसका हाथ समुद्र पर, उसका दाहिना हाथ नदी पर रखूँगा। वह मुझे पुकारेगा, तू मेरा पिता है, मेरा परमेश्वर है। चट्टान, मेरा उद्धारकर्ता, जो 2 शमूएल 7 में दाऊद की वाचा के सूत्र को याद दिलाता है। तू मेरा पिता है, मैं तेरा पुत्र होऊँगा।

फिर, श्लोक 27, मैं उसे अपना जेठा नियुक्त करूँगा, जो पृथ्वी के राजाओं में सबसे महान है। तो फिर, भजन 89 भी एक समय की कल्पना करता है जब दाऊद, अभिषिक्त व्यक्ति, दाऊद का पुत्र, अंततः पूरी पृथ्वी पर शासन करेगा, न कि केवल फिलिस्तीन की भूमि पर। भजन 110।

भजन 110 और पद 6, एक और भजन जिसे अक्सर मसीहाई भजन कहा जाता है। मैं पद 1 से पढ़ना शुरू करूँगा। यह एक छोटा भजन है। भजन 110।

प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने हाथ बैठो जब तक कि मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे पैरों के नीचे की चौकी न बना दूँ। प्रभु तुम्हारा शक्तिशाली राजदण्ड सिय्योन से बढ़ाएगा। तुम अपने शत्रुओं के बीच में शासन करोगे।

युद्ध के दिन तुम्हारे सैनिक तैयार रहेंगे, भोर के गर्भ से पवित्र महिमा से सुसज्जित। तुम्हें अपनी जवानी के लिए नियत तारीख मिलेगी। यहोवा ने शपथ ली है, और वह अपना मन नहीं बदलेगा।

तुम मलिकिसिदक की रीति पर सदाकाल के याजक हो। प्रभु तुम्हारे दाहिने हाथ पर है। वह अपने क्रोध के दिन राजाओं को कुचल देगा।

वह राष्ट्रों का न्याय करेगा, मरे हुओं को ढेर करेगा और पूरी धरती के शासकों को कुचल देगा। वह रास्ते के किनारे की नदी से पानी पीएगा; इसलिए, वह अपना सिर ऊँचा करेगा। आप यशायाह अध्याय 9 में भी कुछ ऐसा ही पाते हैं, जो एक मसीहाई बेटे को संबोधित करता है जो पैदा होने वाला है।

लेकिन इन सबका मुख्य बिंदु यह है कि अंततः, पूरी पृथ्वी दाऊद के शासक की विरासत होगी। अब, हम देखेंगे कि यह महत्वपूर्ण है जब आप कुछ बातों पर गौर करेंगे। नंबर एक, अब आप देखेंगे कि भूमि और सृष्टि का विषय राज्य और राजत्व के विषय से जुड़ा हुआ है।

लेकिन यह तब भी महत्वपूर्ण होगा जब हम यीशु को मसीहा के रूप में देखते हैं और यह भूमि के विषय से कैसे संबंधित है। लेकिन यहाँ मुद्दा यह है कि यशायाह 65 से शुरू करते हुए, लेकिन कई भजनों में भी, हम यह विचार पाते हैं कि अंततः परमेश्वर के लोगों को एक नई सृष्टि, पूरी पृथ्वी विरासत में मिलेगी। अंततः, भविष्य में पूरी पृथ्वी दाऊद के शासक की विरासत होगी।

अब तक पुराने नियम में, हमने देखा है कि परमेश्वर, जलप्रलय की कहानी से शुरू करते हुए, सृष्टि के प्रति अपनी वफ़ादारी दिखाने के ज़रिए अपने इरादे को प्रदर्शित करना शुरू करता है। जलप्रलय में भी, परमेश्वर अपने लोगों को भूमि पर वापस लाने, भूमि को पुनर्स्थापित करने का अपना इरादा दिखाता है ताकि यह एक ऐसा स्थान बन सके जहाँ परमेश्वर अपने लोगों के साथ रह सके, जहाँ उसके लोग रह सकें और भूमि में परमेश्वर की उपस्थिति में हिस्सा ले सकें। हमने यह भी देखा कि यह अब्राहम से किए गए वादे का हिस्सा था। जब परमेश्वर ने अब्राहम को एक भूमि में ले जाने का अपना इरादा दिखाया, तो उसने उसे दिखाया।

यह सिर्फ़ अब्राहम के लिए कुछ अच्छा करने के लिए नहीं था, बल्कि यह उत्पत्ति 1 और 2 की पूर्ति का हिस्सा था, जहाँ अध्याय 3 में आदम और हव्वा को बगीचे से निकाल दिया गया था। अब, परमेश्वर अपने लोगों को उस भूमि पर वापस लाने का इरादा व्यक्त करता है जिसे उसने मूल रूप से बनाया था और उन्हें एक अनुग्रहपूर्ण उपहार के रूप में दिया था। हमने इसे पूरे पुराने नियम के इतिहास में देखा जब इस्राएल ने कनान की भूमि में प्रवेश किया।

इसका उद्देश्य अब्राहम और कुलपिताओं से किए गए वादों को पूरा करना है, साथ ही उत्पत्ति 1 और 2 में सृष्टि के लिए उनके इरादे को भी पूरा करना है। लेकिन आदम और हव्वा की तरह, इस्राएल भी आदम और हव्वा के इतिहास को दोहराता है। और आदम और हव्वा की तरह, इस्राएल भी अवज्ञा करता है। उन्हें भी भूमि, आशीर्वाद के स्थान, परमेश्वर की उपस्थिति के स्थान से निष्कासित या निर्वासित किया जाता है।

और इसलिए, भविष्यवाणियों के पाठों में उस समय का अनुमान लगाया गया है जब परमेश्वर अब्राहम से किए गए वादों की पूर्ति में अपने लोगों को एक बार फिर से भूमि पर वापस लाएगा, लेकिन उत्पत्ति 1 और 2 में परमेश्वर के मूल इरादे की पूर्ति में भी, भूमि, पृथ्वी को अपने लोगों को देने के लिए। इसलिए एक बार फिर, परमेश्वर न केवल अपनी योजना को रद्द करता है या एक नई योजना शुरू करता है, बल्कि इसके बजाय, परमेश्वर अपने लोगों को उनकी भूमि पर वापस लाने का इरादा रखता है। लेकिन कई पाठ, उदाहरण के लिए, यशायाह अध्याय 65 में, कुछ भजन एक समय की आशा करते हैं जब इस्राएल और परमेश्वर के लोग पूरे ब्रह्मांड को विरासत में प्राप्त करेंगे, कि परमेश्वर उन्हें जिस चीज़ पर वापस लाएगा वह केवल फिलिस्तीन की भूमि नहीं है, बल्कि वास्तव में एक नई रचना है।

यहाँ तक कि कुछ भजनों में भी एक समय की भविष्यवाणी की गई है, जब अंततः, दाऊद के राजा की विरासत पृथ्वी, पूरी पृथ्वी का अंत होगी। शायद उत्पत्ति में मानवता के लिए परमेश्वर की योजना की पूर्ति में, कि उन्हें परमेश्वर के उप-शासक के रूप में पूरी पृथ्वी पर शासन करना था और पूरी सृष्टि पर उसका शासन और महिमा फैलाना था। इसलिए परमेश्वर एक दिन पुराने

नियम को पुनर्स्थापित करेगा, अब तक का सारांश देते हुए, भूमि और सृष्टि और नई सृष्टि पर पुराने नियम की शिक्षा।

फिर से, ऐसे अन्य ग्रंथ हैं जिनका हम सहारा ले सकते थे, और मैं विस्तृत होने के बजाय चुनिंदा रहा हूँ। लेकिन इन ग्रंथों का मुद्दा यह है कि ईश्वर एक दिन मानवता और सृष्टि के लिए अपने इरादों को एक नए रचनात्मक कार्य, एक भौतिक सृष्टि में बहाल करेगा, जहाँ वे एक बार फिर उन आशीषों का आनंद लेंगे जिनका उन्हें नई सृष्टि में आनंद लेना चाहिए था और जहाँ एक बार फिर ईश्वर उनके बीच निवास करेगा। अब, यह हमें भूमि और सृष्टि और नई सृष्टि पर नए नियम की शिक्षा के लिए तैयार करता है।

और फिर, हम जो करना चाहते हैं वह कुछ प्रमुख प्रतिनिधि ग्रंथों पर ध्यान केंद्रित करना है। नए नियम की शिक्षा के संबंध में कुछ बातें उजागर करना दिलचस्प और ध्यान में रखने योग्य हैं। एक यह है कि जब तक आप प्रकाशितवाक्य और विशेष रूप से नई सृष्टि के साथ अध्याय 21 और 22 तक नहीं पहुँच जाते, तब तक, देखो ; मैंने नया आकाश और नई पृथ्वी देखी।

जब तक आप वहाँ नहीं पहुँचते, तब तक दिलचस्प बात यह है कि नए नियम में भूमि संबंधी भाषा का लगभग पूर्ण अभाव है। आप पॉल को लोगों की भूमि का वादा करते हुए नहीं पाएंगे। आप यीशु को लोगों को भूमि पर वापस लाने के बारे में बहुत अधिक बात करते हुए नहीं पाएंगे।

आपको नए नियम के अन्य लेखकों को लोगों की भूमि पर वापसी के बारे में बहुत कुछ कहते हुए नहीं मिलेगा। अब, ऐसी कई बातें हैं जो इससे बनाई जा सकती हैं। हम इस बारे में थोड़ी बात करेंगे कि ऐसा क्यों हो सकता है और यह कैसे महत्वपूर्ण हो सकता है।

लेकिन ध्यान रखने वाली सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भूमि के संदर्भ का लगभग पूर्ण अभाव है। जब तक आप प्रकाशितवाक्य 21 तक नहीं पहुँचते, जहाँ आप नई सृष्टि को उभरते हुए पाते हैं, भूमि का बहुत कम संदर्भ है। अब, जैसा कि हमने वाचा की भाषा के साथ कहा, इसका मतलब यह नहीं है कि भूमि अब कोई भूमिका नहीं निभाती है कि सृष्टि और भूमि अब नए नियम से अनुपस्थित हैं, या वे पुराने नियम में महत्वपूर्ण हैं लेकिन नए नियम में नहीं हैं, या वे अब महत्वपूर्ण नहीं हैं लेकिन बाद में हो सकते हैं।

यह बाद में पूर्ति में, अंतिम पूर्ति में हो सकता है। इसलिए, हमें यह पूछने की ज़रूरत है कि भूमि की कोई भाषा क्यों नहीं हो सकती है, लेकिन अगर नहीं भी है, तो क्या भूमि अभी भी नए नियम में एक महत्वपूर्ण और प्रमुख भूमिका निभाती है? दूसरी बात, फिर से, पहचानना है कि नए नियम और सृष्टि की शिक्षाएँ पहले से ही लेकिन अभी तक आरंभिक युगांतशास्त्र के तनाव में साझा करती हैं जिसके बारे में हम पहले ही कुछ बार बात कर चुके हैं। यानी, मुझे लगता है, जब मैं नया नियम पढ़ता हूँ, तो हम पाते हैं कि भूमि इस बात का थोड़ा सा अनुमान लगाने का वादा करती है कि हम कहाँ जा रहे हैं।

भूमि के वादे जो हमें भविष्यवाणियों के साहित्य में मिलते हैं, भजनों में जो कल्पना की गई है, अब्राहमिक वादे के लिए सृष्टि के लिए परमेश्वर का इरादा मसीह और उसके लोगों के आने में पहले से ही पूरा हो चुका है, जो अभी तक नहीं या अंतिम परिणति की प्रत्याशा में है, जो मुझे

लगता है कि हम प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 में पाते हैं। और इसके अलावा, ये वादे पहले से ही और अभी तक नहीं, दोनों में, ये वादे शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों तरह से पूरे होते हैं। जैसा कि हमने कहा, भूमि के पास एक भौतिक और आध्यात्मिक दोनों आयाम हैं।

इसलिए, जब हम पूर्णता पाते हैं, तो हम शायद इसे आध्यात्मिक और शारीरिक रूप से होते हुए पाएँगे। लेकिन भूमि के वादे, मुझे लगता है, इस योजना के अनुसार पहले से ही पूरे हो चुके हैं, जो मसीह और उसके द्वारा लाए गए उद्धार में और उसके लोगों में अंतिम पूर्णता की प्रत्याशा में पहले से ही पूरे हो चुके हैं, मुख्य रूप से भौतिक पूर्ति जो प्रकाशितवाक्य 21 में नई सृष्टि में मिलती है। इसलिए हमारे अगले सत्र में, हम सुसमाचार से शुरू करेंगे, और हम यह देखना शुरू करेंगे कि कैसे सृष्टि, नई सृष्टि और भूमि का विषय नए नियम और सुसमाचार, पॉलिन पत्रों, कुछ अन्य नए नियम के लेखन में अपनी पूर्णता पाता है और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में चरमोत्कर्ष पर पहुँचता है और देखता है कि कैसे पुराने नियम से सृष्टि, नई सृष्टि, भूमि का विषय नए नियम में विकसित होता है और यीशु मसीह के व्यक्तित्व में और अंततः प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में अपने लोगों के लिए परमेश्वर द्वारा अपनी सभी प्रतिज्ञाओं की पूर्णता में अपनी पूर्णता पाता है।

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर व्याख्यान श्रृंखला है। यह सत्र 3 है, पुराने नियम में सृष्टि, भूमि और पुनर्निर्माण।